ऋषिकेश में स्वामी चिदानंद सरस्वती जी के जन्मदिवस कार्यक्रम के लिए माननीय स्पीकर महोदय का सम्बोधन

----

1. सर्वप्रथम, श्रद्धेय स्वामी चिदानंद सरस्वती जी को उनके 70वें जन्मदिवस पर हार्दिक बधाई एवं अनेक मंगलकामनाएं। आपको प्रणाम। आपका सान्निध्य हमें मिल रहा है। आपका आशीर्वाद सभी पर बना रहे, आप दीर्घायु हो, सदा स्वस्थ रहें। आप अपने आध्यात्मिक ज्ञान से और अपने सामाजिक सरोकारों से भारतीय संस्कृति की महान परंपराओं को और अधिक समृद्ध बनाएं तथा समस्त मानवता का मार्गदर्शन करते रहे; प्रभु से मेरी यही प्रार्थना है।

2. दिव्य और पावन नगरी ऋषिकेश को प्रणाम करता हूँ। एक बार फिर यहाँ आकर असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। यहाँ की आध्यात्मिकता और पवित्रता से मन प्रसन्न है, हृदय प्रफुल्लित है।

3. इस शुभ दिवस पर हम सेवा और परोपकार के लिए समर्पित परमार्थ निकेतन आश्रम में मानवता और पर्यावरण से जुड़े विषयों पर सात दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन करने जा रहे हैं। इस कार्यक्रम के शुभारंभ पर आज परमार्थ निकेतन आश्रम में उपस्थित और यहाँ से जुड़े सभी लोगों को मैं बधाई देता हूँ, मैं आपको बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

4. इस कार्यक्रम में उपस्थित होना मेरे लिए गर्व का विषय है। आप जैसे संतों का स्नेह, सान्निध्य और आशीर्वाद मुझे मिल रहा है, यह मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात है। 'परमार्थ निकेतन आश्रम' की गंगा आरती की स्मृतियां मेरे मन में हमेशा ताज़ा बनी रहती हैं।

5. स्वामी चिदानंद सरस्वती जी और परमार्थ परिवार अपने आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, यौगिक कार्यों से समस्त मानवता की सेवा का पुण्य कार्य कर रहे हैं। दुनिया भर में सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार में स्वामी जी का योगदान अतुलनीय रहा है। आपकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में तैयार हुआ **हिन्दू धर्म का शब्दकोश** आज सनातन सभ्यता को और अधिक समृद्ध करता है।

6. योग और ध्यान के प्रचार-प्रसार में भी स्वामी जी और पूरे परमार्थ निकेतन परिवार ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। हर वर्ष दुनियाभर के सैलानी यहाँ आश्रम में आकर योग और ध्यान का अभ्यास करते हैं। इससे न सिर्फ उन्हें मन की शांति मिलती है, इसके साथ ही वे भारतीय संस्कृति से भी जुड़ते हैं।

7. जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा, युवाओं को कौशल - प्रशिक्षण और क्षेत्र में असहाय लोगों की स्वास्थ्य सेवा का काम भी आश्रम द्वारा किया जा रहा है।

8. पर्यावरण संरक्षण एवं गौरक्षा के पुनीत कार्य भी स्वामीजी के मार्गदर्शन में आश्रम परिवार द्वारा किए जा रहे हैं। गंगा के किनारे पौधारोपण और जीवनदायिनी गंगा नदी की साफ सफाई के लिए भी आश्रम परिवार द्वारा निरंतर मिशन मोड में कार्य किए गए हैं।

9. सनातन संस्कृति को समृद्ध बनाने के लिए स्वामी जी के प्रयास सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं है, विदेशों में भी अनेक मंदिरों और भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना में आपकी मुख्य भूमिका रही है। सर्व धर्म सद्भावना सम्मेलनों के माध्यम से स्वामी जी ने संसार को सद्भाव और सौहार्द का संदेश दिया है।

10. भारत की भूमि संतों, ऋषि-मुनियों की पुण्यस्थली रही है। हमारे संतों ने भारत की सभ्यता और संस्कृति को दुनिया भर में समृद्ध बनाया है। यहां की संत परंपरा ने आम जनमानस और समस्त संसार का मार्गदर्शन किया है। संत कबीर, गोस्वामी तुलसी दास, संत रविदास जी, बाबा गुरू नानक जी, मीराबाई तथा संत नामदेव जी जैसे अनेक संतों ने अपने दर्शन से भारत भूमि को धन्य किया है।

11. उत्तराखंड की इस देवभूमि पर मैं कई बार आया हूँ। यह प्रांत भारत की धार्मिक और आध्यात्मिक राजधानी है। पूरे भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के कोने-कोने से लोग यहां आध्यात्मिक शांति पाने और धार्मिक परंपराओं का अनुभव करने के लिए आते हैं। माँ गंगा के निर्मल जल में स्नान करने से उन्हें दैहिक, दैविक और मानसिक पवित्रता तथा शांति मिलती है।

12. एक से बढ़कर एक तपस्वी आज भी इस प्रांत के हर कोने में आध्यात्मिक चेतना को जगाते रहते हैं। ऐसे अनेक संतजन आज इस कार्यक्रम में उपस्थित हैं एवं अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा से हमारे अंतर्मन को आलोकित कर रहे हैं। इन भावनाओं को हम शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते हैं। आप सभी आध्यात्मिक विभूतियों को मैं एक बार पुनः प्रणाम करता हूँ।

13. भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे प्राचीनतम संस्कृतियों में से रही है। इसे हम सनातन संस्कृति भी कहते हैं। हमारी संस्कृति सेवा, समर्पण और सामूहिकता का शाश्वत संदेश देती है।

14. कोरोना के मुश्किल समय में हमने देखा कि जब दुनिया के बड़े-बड़े विकसित देश जिनका हेल्थ infrastructure इतना विकसित था, फिर भी वे वहां कोरोना की स्थितियों को संभाल नहीं पाए। मगर, भारत ने अपनी संस्कृति का अनुसरण करते हुए सेवा, समर्पण और सामूहिकता के साथ उस कठिन चुनौती को पार किया। हमारे सशक्त एवं समर्थ नेतृत्व ने लोगों को सकारात्मक संदेश दिया।

15. सारा देश एकजुट था। हमने देखा कि लोगों ने जरूरतमंदों की सहायता की, भूखों को भोजन कराया, बीमार लोगों के दवा-पानी की व्यवस्था की और निर्भय होकर समाज की सेवा की।

16. हमारे अंदर परमार्थ का भाव था जिसने हमारी निःस्वार्थ सेवा के संकल्प को मजबूत किया, तभी हम उस कठिन समय से उबर पाए।

17. हमारी सनातन संस्कृति में नर सेवा को नारायण सेवा बताया गया है। यह संदेश हमारे परिवारों से बच्चों को मिलता है। इन विचारों और संस्कारों से परिपक्व हुए युवा राष्ट्र निर्माण के कार्यों से जुड़ते हैं। यही कारण है कि आज भारत दुनिया के अग्रणी राष्ट्रों में से एक है और दुनिया को दिशा दे रहा है।

18. मुझे विश्वास है कि हमारी सांस्कृतिक समृद्धि, सामूहिकता, सक्षम नेतृत्व, युवाओं की क्षमता और आत्मनिर्भरता के बल पर भारत निश्चित ही 21वीं सदी में दुनिया का नेतृत्व करेगा।

19. स्वामी जी कहते हैं कि आज इंटरनेट से जुड़ने के साथ-साथ मनुष्यों को इनरनेट से भी जुड़ना होगा। आपका यह संदेश मानवता के लिए अध्यात्म की महत्ता को बताता है। हमारी संस्कृति में सशक्त तन के साथ समर्थ मन पर कितना जोर दिया गया है, इसके बारे में बताता है।

20. वर्ष 2014 में हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी की पहल पर संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून का दिन अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया था। योग विधा की इस विश्वव्यापी स्वीकृति ने भी हमारी प्राचीन संस्कृति और जीवनशैली पर मुहर लगाई है।

21. इस वर्ष सम्पूर्ण भारत देश अपनी आज़ादी के 75वें वर्ष को 'आज़ादी के अमृत महोत्सव' के रूप में मना रहा हैं। इस महोत्सव में जल संरक्षण का ध्यान रखते हुए हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाने की बात है। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि स्वामी जी के नेतृत्व में परमार्थ निकेतन परिवार समाज-निर्माण और राष्ट्र-निर्माण की अहम जिम्मेदारियां निभा रहा है।

22. आज आप सबके बीच इस पवित्र वातावरण में मुझे समय बिताने का सौभाग्य मिला। मैं एक बार फिर स्वामी चिदानंद सरस्वती जी को उनके 70वें जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। आप दीर्घायु हों, सदा स्वस्थ रहें, हमें सदा सन्मार्ग दिखाते रहे, हमें प्रेरणा देते रहे, ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ।

23. मैं परमार्थ निकेतन परिवार की महान सेवा परंपरा को प्रणाम करता हूँ। यहां उपस्थित संतजनों एवं अध्यात्म जगत से जुड़े सभी लोगों को नमस्कार करता हूँ।

धन्यवाद, जय हिन्द।